अध्ययन सामग्री
बी॰ ए॰ (संस्कृत) पार्ट 3
प्रश्नपत्र - षष्ठ
डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्राचार्य
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
आरा (बी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰)

09.05.20

पद

यह संज्ञा सूत्र है। इसका सूत्र है - 'सुप्तिङन्तं पदम्' सुप् प्रत्ययान्त और तिङ् प्रत्ययान्त शब्दों की पद संज्ञा होती है। प्रातिपदिक में लगने वाले प्रत्ययों को सुप् तथा धातु में लगने वाले प्रत्ययों को तिङ् कहते हैं। सुप् के अन्तर्गत 'सु औ जस्' आदि 21 प्रत्यय होते हैं तथा तिङ् के अन्तर्गत 'तिप् तस् झि' आदि 18 प्रत्यय हैं। इनमें से कोई भी प्रत्यय जिसके अन्त में लगा रहेगा वह 'पद' कहलायेगा।

उदाहरण - 'राम' शब्द से सुप् - सु प्रत्यय लगने पर
रामः पद होगा।
इसी प्रकार पठ् धातु में तिङ् - तिप् प्रत्यय लगने से 'पठति' पदसंज्ञक होगा।

वाक्य में मूल शब्द (प्रातिपदिक) का या धातु का प्रयोग नहीं होता है, अपितु उसमें सुप् और तिङ् युक्त पदों का ही प्रयोग होता है। अतः सिद्धान्त है -

अपदं न प्रयुञ्जीत

अर्थात् जो पद नहीं है, उसका प्रयोग नहीं करें।

Scanned by CamScanner

भ — 'भ' संज्ञा का सूत्र है — 'यचि भम्'

सूत्र का शब्दार्थ है — (यचि) यच् परे रहने पर (भम्) 'भ' संज्ञा हो। किन्तु इससे सूत्र का आशय स्पष्ट नहीं होता। इसलिए 'स्वादिष्वसर्वनामस्थाने' इस सूत्र की अनुवृत्ति करनी होगी। 'यच्' में यकार और ~~अकार~~ अच् का समावेश होता है।

सूत्र का भावार्थ होगा — सर्वनामस्थान से भिन्न यकारादि और अजादि (जिसके अन्त में कोई स्वर हो) प्रत्यय परे होने पर पूर्वशब्दसमुदाय की 'भ' संज्ञा होती है।

उदाहरण — विश्वपा + अस् (शस्) में अजादि प्रत्यय 'अस्' परे होने पर 'विश्वपा' की 'भ' संज्ञा होगी।

पूर्वसूत्र 'स्वादिष्वसर्वनाम स्थाने' से विश्वपा+अस् इस स्थिति में 'विश्वपा' को पद संज्ञा प्राप्त है, किन्तु प्रस्तुत सूत्र से उसको 'भ' संज्ञा प्राप्त होती है।

घु — यह संज्ञा सूत्र है।

'दा-धा-घु-अदाप्'

सूत्र का शब्दार्थ है — (अदाप्) दाप् और दैप् को छोड़कर (यथा) 'दा' और 'धा' रूप वाली धातुएँ (घु) 'घु' संज्ञक होती हैं।

'दा' रूप धातुएँ चार हैं —

1) डुदाञ् दाने (जुहोत्यादि०, दान देना)

2) दाण् दाने (भ्वादि०, दान देना)

Scanned by CamScanner

3) दो अवखण्डने (दिवादि०, बाँटना या काटना)
4) देङ् रक्षणे (भ्वादि०, रक्षा करना)

धा रूप धातुएँ दो ही हैं —

1) डुधाञ् (जुहोत्यादि०, धारण या पोषण करना)
2) धेट् (भ्वादि०, पीना)

सूत्र का भावार्थ होगा — डुदाञ्, दाण्, दो, देङ्, डुधाञ् और धेट् — इन छः धातुओं की 'घु' संज्ञा होती है।
'घु' संज्ञा होने पर इन धातुओं से कित्प्रत्यय में 'ईकारादेश' आदि 'घु संज्ञा' विषयक कार्य होते हैं।

टि — यह संज्ञा सूत्र है।

'अचोऽन्त्यादि टि'

सूत्र का शब्दार्थ है — (अचः) अचों के मध्य में (अन्त्यादि) अन्त्य अच् जिसके आदि में हो, ऐसा शब्द-स्वरूप (टि) 'टि' संज्ञक होता है।

तात्पर्य यह है कि शब्द के अन्त में आनेवाला अच् (स्वर-वर्ण) जिस वर्ण-समुदाय के आदि में आता है, उस वर्ण-समुदाय को 'टि' कहते हैं।

उदाहरण — 'मनस्' का अन्त्य अच् नकारोत्तरवर्ती अकार है। यह सकार के पूर्व या आदि में आया है। अतः प्रकृत सूत्र से यहाँ 'अस्' की 'टि' संज्ञा होगी।

स्पष्टीकरण के लिए सूत्रार्थ को इस रूप में प्रकट किया जा सकता है —

1) शब्द के अन्तिम स्वर के पश्चात् यदि कोई व्यञ्जन आवे तो उस अन्तिम स्वर और व्यञ्जन के सम्मिलित रूप को 'टि' कहते हैं, यथा — 'मनस्' में 'अस्' 'टि' संज्ञक है।
2) शब्द के अन्तिम स्वर के पश्चात् यदि कोई व्यञ्जन न आवे तो उस अन्तिम स्वर को ही 'टि' कहते हैं, यथा — 'शक' में अन्त्य अकार 'टि' संज्ञक है।

Scanned by CamScanner

संयोग — यह संज्ञा (हल् संज्ञा विधायक) सूत्र है।

'हलोऽनन्तराः संयोगः'

सूत्र का शब्दार्थ है — (अनन्तराः) व्यवधान रहित अर्थात् जिनमें व्यवधान न हो ऐसे (हलः) हल् (व्यंजन) (संयोगः) संयोग-संज्ञक होते हैं।

हल् प्रत्याहार है और उसके अन्तर्गत सभी व्यञ्जन आ जाते हैं।

व्यवधान का अभिप्राय है - यहाँ अच् (स्वर) के व्यवधान से है।

सूत्र का भावार्थ होगा — यदि स्वर वर्ण का व्यवधान न हो तो दो या दो से अधिक व्यंजनों को संयोग कहते हैं।

उदाहरण — कर्ण में रकार और णकार के बीच कोई स्वर-वर्ण नहीं आया है। अतः प्रकृत सूत्र से दोनों की संयोग संज्ञा होती है।

इसी प्रकार 'इन्द्र' में स्वर-वर्ण का व्यवधान न होने से नकार, दकार और रकार की 'संयोग' संज्ञा होती है।

यह संयोग संज्ञा स्वर रहित व्यञ्जन समुदाय की होती है, प्रत्येक व्यञ्जन की नहीं। यथा—कर्ण में रकार और णकार के समुदाय की संयोग संज्ञा होती है, रकार और णकार की पृथक्-पृथक् नहीं।

उपधा — यह संज्ञा सूत्र है।

'अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा'

सूत्र का शब्दार्थ है — (अलोऽन्त्यात्) अन्त्य अल् से (पूर्वः) पूर्व वर्ण (उपधा) उपधा संज्ञक होते हैं।

अल् प्रत्याहार में सब वर्ण आ जाते हैं। अतः समुदाय के अन्तिम वर्ण से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होगी।

उदाहरण — 'सरव् अन्' में अन्त्य अल् नकार है और उससे पूर्व वर्ण ह्रस्व अकार है, अतः उसकी उपधा संज्ञा होगी।

अर्थात् अन्तिम वर्ण के ठीक पहले आने वाले वर्ण को उपधा कहते हैं।

Scanned by CamScanner